रात्रि क्लास 3/12/68 ओम शान्ति शिवबाबा याद है?

और सभी हैं भक्ति-मार्ग के सतसंग। वहाँ तो बहरे आदि भी चल जाते हैं। यहाँ तो पढ़ाई है। बहरे समझ न सकें। तो नजदीक बिठाया जाता है, यहाँ तुम समझदार बनते हो। बच्चे समझते हैं बाप पढ़ाते हैं, मैनर्स सिखलाते हैं। बाप कहते हैं काम विकार से हराने के कारण तुम कोई काम के न रहे हो। अभी इन पर जीत पाकर समझदार बनते हो। बेसमझ समझदारों का वर्णन करते हैं। यह बातें भी अभी तुम समझते हो। भगवानुवा(च) सभी इस समय बेसमझ हैं। फिर भगवान ही श्रृंगार कर समझदार बनाते हैं। यह (ल॰ना॰) श्रृंगारे हुए हैं ना। दैवीगुण भी धारण करनी है। इसमें पुरुषार्थ करना होता है। भक्तिमार्ग में पुरुषार्थ करना होता नहीं। स्कूल में पुरुषार्थ कर बैरिस्टर, जज आदि बनते हैं। भक्तिमार्ग में कुछ भी नहीं बनते हैं। बाप को बुलाते हैं हे! पतित-पावन बाबा आओ, आकर हमको पावन बनाओ; परन्तु अर्थ कुछ नहीं समझते। बापू जी गाते थे; परन्तु जानते थोड़े ही थे, रामराज्य किसको कहा जाता है। अभी तुम्हारा युद्ध है 5 विकारों से। देही-अभिमानी बनना होता है। बाप कहते हैं अपन को आत्मा समझो। देहअभिमान में आने से उल्टी उल्लू बन जाते हो। दुनिया में कोई भी नहीं जानते भगवान किसको कहा जाता है। जिधर देखो उधर भगवान ही भगवान कह देते। बाप बच्चों को बहुत अच्छी रीत पढ़ाते हैं और बच्चों से पूछते हैं, अच्छी रीत समझते हो? मुझ अपने निराकार बाप को याद करो। भगवानुवाच है तो भगवान निराकार होता है। साकार भगवान होता नहीं। देवताओं को भगवान नहीं कहा जाता। मनुष्य मनुष्य को नमः नहीं करेंगे। पवित्र को अपवित्र नमन करते हैं। तो यह सभी बातें अच्छी रीत समझने, समझाने की हैं। शिवबाबा को तो जानते हो ना। बाप के लिए ऐसे नहीं कहेंगे कुत्ते-बिल्ले सभी में है। बाप कहते हैं भारत में कितनी गालियाँ देते हैं। कितनी गंद है। एक तो गालियाँ देते हैं, दूसरा फिर विकार में जाते हैं। तो डबल गंदे हुए ना। पावन दुनिया सतयुग है नई दुनिया। कोई को कहो तुम पतित हो तो बिगड़ेंगे। अरे, यह है ही पुरानी दुनिया। पुरानी दुनिया में पतित होते हैं। गाँधी भी गाते थे पतित-पावन..... यह कोई भी नहीं समझते हम बिल्कुल नर्कवासी हैं। बाप फ़ील कराते हैं—बताओ, तुम कौन थे। जैसे बाप कहते हैं ना कहाँ गए थे? वेश्या पास काला मुँह करने गए, शर्म नहीं आती। बाप भी कहते हैं मैं तुमको इतना गोरा बना कर गया, विश्व का मालिक बनाया, सभी पैसे कहाँ गए? पैसे बरबाद करते हैं। बेहद का बाप तो समझावेंगे ना। बाप है भी गरीब निवाज़। उन्हों को मर्तबे आदि का इतना नहीं रहता। बाप तो सभी कहेंगे, तुम तो बन्दर हो। इसलिए बाप कोई से मिलते नहीं। यह पतित दुनिया है ना; परन्तु मनुष्य-2 भी देखना होता है। कोई तो फिर गाली भी देने लग पड़ेंगे। भगवानुवाच यह है आसुरी सम्प्रदाय। हमारी है दैवी सम्प्रदाय। साधु-संत आदि का उद्धार भी बाप को करना है, तो फिर वह किसका उद्धार कर कैसे सकेंगे? परन्तु ऐसी बात करने वाला हनुमान जैसा बहादुर चाहिए। मनुष्यों के गुण आसुरी हैं। अर्थात बन्दर मिसल हैं। मनुष्य की भेंट बन्दर से की है। अभी तुम रावण पर जीत पाते हो। तुम अभी बाप से बल लेकर बन्दरों को मंदिर लायक बनाते हो। अभी तुम शिवबाबा के बच्चे पवित्र बनते हो। देवी-देवताएँ बाबा के बच्चे थे। शिवबाबा ने संगम पर पढ़ाया, जो मनुष्य से देवता बने। इसमें तेज बुद्धि चाहिए पढ़ने लिए। पढ़कर पढ़ानी है। नहीं पढ़ाते तो जड़जड़ीभूत बुद्धि कहेंगे। फिर हल्का पद पावेंगे। तुम्हारी बुद्धि अगर रुलेगी-पिलेगी तो कम पद पावेंगे। एक बाप से बुद्धि रखेंगे तो ऊँच पद पावेंगे। अनपढ़े, पढ़े आगे भरी ढावेंगे। देरी से आने वालों को भी कोई फिक्र न करनी चाहिए। नॉलेज तो सेकण्ड के लिए है। सेकण्ड में जी॰ मुक्ति। बाप को पहचाना और वर्सा मिला। बाप जो विश्व का मालिक बनाते हैं, ऐसे बाप के पास तो जाकर हम बैठ जावें। कब छोड़े ही नहीं; परन्तु कई तो बाबा पास आते ही नहीं। माया का थप्पड़ लगने से मर पड़ते। महारथियों को भी माया हप कर लेती है। महारथी का नाम भी तुम पर है। वह मंदिर बनाने वाले जानते नहीं। अंधश्रद्धा कितनी है। मूर्ति बनाकर पालना कर फिर डुबो देते हैं। लात मार कर भी डुबोते हैं। तुम सभी समझते हो हम अव्वल नम्बर बेवकूफ थे। नम्बरवन पतित था। मुझे इनका ही रथ चाहिए। यह तो पतित था ना। अभी तुम म(नुष्य) से देवता बनते हो। अभी बाप कहते हैं मामेकम् याद करो। याद करने से तुम सतोप्रधान बन जावेंगे। फिर नई दुनिया में आवेंगे। कितनी सीधी बात बताते हैं। अच्छा, बच्चों को गुडनाइट। नमस्ते।